10

सामर्थ, समझ और सम्पूर्णता के लिए प्रार्थना

(3:14-21)

अन्यजातियों में अपनी सेवकाई, परमेश्वर की मंशा में कलीसिया की भूमिका और मसीह के संदेश को सुनकर मानने वालों के द्वारा परमेश्वर तक पहुंच के आनन्द पर विचार करते हुए पौलुस ने परमेश्वर से विनती की।

आमुख (3:14, 15)

[14]मैं इसी कारण उस पिता के सामने घुटने टेकता हूं, [15]जिस से स्वर्ग और पृथ्वी पर, हर घराने का नाम रखा जाता है।

आयत 14. उत्तर मिली प्रार्थना भेद की मंशा के लिए जो प्रकट हो चुका है आवश्यक होनी थी। इसका अर्थ यह है कि इफिसुस के मसीही लोगों को वह सब बनने और करने के लिए जो कलीसिया के रूप में परमेश्वर उन से चाहता था परमेश्वर की सामर्थ और अगुआई की आवश्यकता थी। **इसी कारण** उस सब की ओर ध्यान दिलाता है जो पौलुस ने भेद के बारे में कहा था और हमें आयत 1 में उन्हीं शब्दों की ओर वापस ले जाता है। जैसा कि यहां है, वहां पर पौलुस ने उन्हें जो परमेश्वर की योजना का भाग बन गए हैं मिलने वाली बड़ी आशिषों की बात की। 3:14-21 वाली प्रार्थना एक विनती है कि परमेश्वर कलीसिया को परमेश्वर द्वारा दिए उसके मिशन को पूरा करने की सामर्थ देती है।

मैं घुटने टेकता हूं दीनता और निर्भरता के व्यवहार को दर्शाता है। प्रार्थना में अपनाई जाने वाली शरीर की मुद्रा का इतना महत्व नहीं है जितना मन के व्यवहार का। बाइबल में खड़े होकर (मरकुस 11:25; लूका 18:11, 13), घुटने टेककर (1 राजाओं 8:54; दानिय्येल 6:10; लूका 22:41; प्रेरितों 7:60; 20:36; 21:5) और मुंह के बल गिरने (मत्ती 26:39) जैसी विभिन्न मुद्राओं का उल्लेख है।

सामने यूनानी उपसर्ग (*pros*) का अनुवाद है जिसका अर्थ है ''की ओर, *वास्तविक और मानसिक दिशा*।''[1] वह **पिता** की ओर मुंह किए हुए था। यूहन्ना 1:1 में इसी उप-पद का इस्तेमाल हुआ है, जहां यीशु को ''परमेश्वर के साथ'' होने की बात कही गई है। इफिसियों की पत्री की कई आयतों में परमेश्वर को ''पिता'' कहा गया है (देखें 1:2, 3, 17; 2:18; 4:6; 5:20; 6:23)। यीशु मसीह का पिता परमेश्वर पौलुस और इफिसुस के मसीही लोगों का भी

पिता था।

आयत 15. स्वर्ग और पृथ्वी पर का कोई भी सम्बन्ध जिसे **घराने** के रूप में कहा जा सकता है उस **का नाम** परमेश्वर की ओर से मिला है। एक बड़े अर्थ में कि सभी ''परमेश्वर की संतान'' हैं यह स्वर्ग में स्वर्गदूतों के लिए और पृथ्वी पर यहूदियों और अन्यजातियों के लिए हो सकता है (देखें प्रेरितों 17:28)। कठोर अर्थ में हम समझते हैं कि केवल मसीही लोग ही परमेश्वर का परिवार बनते हैं। पौलुस ने परमेश्वर से जो सब का सृजनहार, प्रभु और छुड़ाने वाला है, प्रार्थना की।

आत्मा और मसीह की सामर्थ के लिए याचना (3:16, 17)

[16]कि वह अपनी महिमा के धन के अनुसार तुम्हें यह दान दे, कि तुम उसके आत्मा के अपने भीतरी मनुष्यत्व में सामर्थ पाकर बलवन्त होते जाओ। [17]और विश्वास के द्वारा मसीह तुम्हारे हृदय में बसे कि तुम प्रेम में पड़ पकड़कर और नेव डाल कर।

आयतें 16, 17. पौलुस ने इफिसियों के लिए तीन याचनाएं की। पहली याचना का आरम्भ संयोजन (*hina,* **की**) के साथ होता है जो *''उद्देश्य, डिज़ाइन और परिणाम''* का संकेत देता है।[2] पौलुस की प्रार्थना के तीन उद्देश्य या डिज़ाइन थे, जिनका संकेत उसकी विनतियों के द्वारा दिया गया। उसने यह कहते हुए आरम्भ किया कि उसने परमेश्वर से कहा है कि वह **अपनी महिमा के धन के अनुसार** उन्हें **दे**। ये शब्द 1:17, 18 वाली पहली प्रार्थना का स्मरण दिलाते हैं जहां पौलुस ने प्रार्थना की कि ''महिमा का पिता'' इफिसियों को कुछ विशेष आशिषें ''दे।'' हमारे सामने जो आयतें हैं उन में पौलुस ने ''दे'' शब्द का इस्तेमाल किया परन्तु दोनों बार उसने ''महिमा'' शब्द इस्तेमाल किया। ''अपनी महिमा का धन'' पौलुस का परमेश्वर की सामर्थ के बहुतायत से होने के कहने का ढंग था। रोमियों 9:23, फिलिप्पियों 4:19 और कुलुस्सियों 1:27 में ऐसे ही वाक्यांश मिलते हैं। रोमियों 6:4 उसने ''सामर्थ'' का संकेत देने के लिए ''महिमा'' का इस्तेमाल किया जब उसने कहा, ''मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया।'' इफिसियों 1:19, 20 में उसने कहा कि मसीह को परमेश्वर की सामर्थ के द्वारा जिलाया गया था।

पौलुस ने प्रार्थना की कि परमेश्वर की असीम **सामर्थ** अपने आत्मा के द्वारा इफिसियों को अन्दर से **बलवंत** बनाने के लिए आत्मा के द्वारा छुडा ले ताकि वे आयतें 10 और 11 में बताए गए मिशन को पूरा कर सके। वह बलवंत होना जिसके लिए पौलुस ने प्रार्थना की **उसके आत्मा** अर्थात परमेश्वर के आत्मा के द्वारा होना था जिसमें उस पूर्ण मिरास की गारंटी के रूप में जो आने वाले युग में उन्हें मिलनी थी इफिसियों के ऊपर छाप कर दी थी (1:13, 14)। आत्मा वह माध्यम है जिसके द्वारा परमेश्वर कलीसिया में उपस्थित है (2:22)। **भीतरी मनुष्यत्व** मसीही व्यक्ति के उस भीतरी भाग को कहा गया है जिसका सम्बन्ध परमेश्वर के साथ है। यह मनुष्य का वह भाग है जो हमें ''परमेश्वर की व्यवस्था से प्रसन्न'' (रोमियों 7:22; NIV) रखता है और मन के ''नये हो जाने से बदलता'' है (रोमियों 12:2), जो कि ''दिन प्रतिदिन नया होता जाता है'' (2 कुरिन्थियों 4:16)। ''भीतरी मनुष्यत्व'' मन के ''आत्मा में नया होता जाता'' है (इफिसियों

4:23, 24; देखें 2 कुरिन्थियों 5:17)। यह परमेश्वर के स्वरूप में बढ़ने वाला आत्मिक रूप है (कुलुस्सियों 3:10) कलीसिया के लिए ठहराए परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने के लिए उसे बलवंत किया जाना आवश्यक है।

पौलुस ने पहली याचना जारी रखी। उसने कहा कि इफिसियों को भीतरी मनुष्यत्व में परमेश्वर के आत्मा के द्वारा सामर्थ से बलवंत किया जाए, ताकि **मसीह** [उनके] **हृदय में बसे**। ''बसे'' के लिए शब्द (*katoikeō*) (''बस जाना और टिक जाना'') का अर्थ देते हुए (*oikeō,* ''किसी के अन्दर घर की तरह रहना'') और (*kata,* ''नीचे'') से बना एक मिश्रित शब्द है।[3] पौलुस ने आत्मा के ''भीतरी मनुष्यत्व में होने'' और मसीह के ''तुम्हारे हृदय में'' होने की बात की। हृदय मनुष्य के ''भावना, सोचना, इच्छा करना'' के केन्द्र वाला भाग है।[4] और ''भीतरी मनुष्यत्व'' से मेल खाता है। जिस प्रकार से आत्मा मसीही व्यक्ति के ''भीतरी मनुष्यत्व'' में बसता है, उसी प्रकार से मसीह मसीही लोगों के हृदय में बसता है। एक को पाने के लिए दूसरे को पाना आवश्यक है। पौलुस ने पहले कलीसिया को ''आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवास स्थान'' बताया था (2:22)। इसलिए कलीसिया जो कि परमेश्वर के लोगों से बनी है, वह स्थान है जहां परमेश्वर, मसीह और आत्मा वास करते हैं। पौलुस यह प्रार्थना कर रहा था कि आत्मा के वास करने की सामर्थ से हर मसीही के जीवन की पहचान बनने के लिए मसीह का स्वभाव बन जाए।[5]

हृदय में मसीह का वास **विश्वास के द्वारा** होता है। मसीही व्यक्ति को कैसे मालूम कि उसे भीतरी मनुष्यत्व में आत्मा के द्वारा बलवंत किया जाता है और यह कि मसीह उसके हृदय में बसता है? विश्वास से वह जानता है। वह इन सच्चाइयों को मानता है क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें बताया है और वह उन्हें होने देता है। यह विश्वास के द्वारा ही है। इफिसियों द्वारा उद्धार को स्वीकार किए जाने (2:8) परमेश्वर तक उनकी पहुंच (3:12) में विश्वास एक महत्वपूर्ण तत्व था। विश्वास वह मार्ग भी था जिसके द्वारा यह स्वीकार करना आवश्यक था कि वास करने वाला आत्मा और वास करने वाला मसीह उस कार्य को पूरा करने के लिए आवश्यक सामर्थ देगा।

मसीह के प्रेम को समझने के लिए याचना (3:17-19)

[17]कि तुम प्रेम में जड़ पकड़कर और नेव डाल कर। [18]सब पवित्र लोगों के साथ भली भांति समझने की शाक्ति पाओ; कि उसकी चौड़ाई, और लम्बाई, और ऊंचाई, और गहराई कितनी है। [19]और मसीह के उस प्रेम को जान सको जो ज्ञान से परे है।

आयतें 17-19. पौलुस की दूसरी यांचना भी संयोजक शब्द *hina* (कि) **के द्वारा** भी बताई गई है। **जड़** पकड़ने के लिए मज़बूती से लगाना, और **नेव** बनाने में पक्की **नींव** का विचार मिलता है।[6] **प्रेम** वह भूमि है जिसमें मसीही व्यक्ति को मज़बूती से लगाया जाना और जिसकी नींव पर शेष जीवन बनना आवश्यक है। ऐसी ही बात कुलुस्सियों के नाम पौलुस के पत्र में मिलती है जहां उसने कहा कि विश्वासी लोग ''[मसीह] में जड़ पकड़ते और बढ़ते'' जाएं (कुलुस्सियों 2:7)। प्रेम का देने वाला मसीह स्वयं है।

पौलुस ने प्रार्थना की कि ये मसीही लोग **किसी बात से** पकड़ (*katalambanō*) अर्थात

किसी चीज़ को ''पकड़ने, थामने, उत्सुकता के विचार से ... मन से पकड़ना ... समझना किसी सच्चाई को।''[7] व्याख्याकर्त्ताओं द्वारा इस बात के विभिन्न विचार सुझाए गए हैं कि इफिसियों ने क्या समझना था।[8] परन्तु संदर्भ बताता है कि पौलुस चाहता था कि वे प्रेम से अपने मिशन को पूरा करने के लिए प्रेरित हों। आयत 17 में उसने कहा कि वह चाहता है कि वे ''प्रेम में जड़ पकड़'' लें और आयत 19 में उसने कहा कि वह चाहता है कि वे ''मसीह के प्रेम को जान'' लें। उनके मिशन को पूरा करने की सामर्थ आत्मा का वास और मसीह का वास था, और उनके अपने मिशन को पूरा करने की प्रेरणा प्रेम था। सही काम को करने की ऊंची प्रेरणा दोष, भय या सम्मान की इच्छा नहीं, बल्कि प्रेम होता है। इस आयत में पौलुस ने ईश्वरीय प्रेम के चार आयाम बताए:

चौड़ाई। मनुष्य के लिए ईश्वरीय प्रेम मनुष्य जाति से चौड़ा है। किसी को भी निकाला नहीं गया है।

लम्बाई। इसकी कोई सीमा नहीं है कि ईश्वरीय प्रेम कहां तक जाएगा।

ऊंचाई। ईश्वरीय प्रेम मसीही व्यक्ति को परमेश्वर के परिवार का भाग होने और स्वर्ग की आशा होने तक ऊंचा करता है।

गहराई। ईश्वरीय प्रेम खोए हुए को निकालने के लिए पाप की दलदल में नीचे तक चला जाता है।

पौलुस का मानना था कि इफिसुस के लोग ईश्वरीय प्रेम को यदि एक माप तक भी समझ सकते तो वे कलीसिया के लिए परमेश्वर के उद्देश्य को पूरा करने के लिए प्रेम से प्रेरित होना सीख सकते थे। मसीह के लिए उनके प्रेम के साथ-साथ उनके लिए मसीह का प्रेम। वह चाहता था कि वे **मसीह के प्रेम को जान** जाएं। ''जान'' के लिए शब्द *gnōsis* सम्बन्धित है जो ''पहचान, ... ज्ञान या समझ'' से जुड़ा है।[9] पौलुस ने उनके लिए प्रार्थना की कि उन्हें मसीह के प्रेम की बेहतर समझ आ जाए। उसने हमारे लिए परमेश्वर के प्रेम और हमारे लिए मसीह के प्रेम को ''एक ही सिक्के के दो पहलू'' होना माना।[10] रोमियों 8:35 में उसने पूछा, ''कौन हम को मसीह के प्रेम से अलग करेगा?'' और फिर उत्तर दिया कि कोई चीज़ ''हमें परमेश्वर के प्रेम से जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग [न] कर सकेगी'' (आयत 39)। पौलुस ने पहले परमेश्वर के ''बड़े प्रेम'' (इफिसियों 2:4) की बात की थी और फिर ज़ोर दिया कि ''मसीह ने भी तुम से प्रेम किया'' (5:2)। उसने परमेश्वर के प्रेम और मसीह के प्रेम को बेजोड़ होने के रूप में देखा।

पौलुस ने प्रार्थना की कि इफिसुस के लोग मसीह के प्रेम को जान जाएं, परन्तु साथ ही जोड़ दिया, **जो ज्ञान से परे है**। विश्वासी व्यक्ति एक हद तक ''चौड़ाई, लम्बाई, ऊंचाई और गहराई'' पर विचार करके ईश्वरीय प्रेम की विशालता की सच्चाई को ''समझ'' सकता है; परन्तु इसे पूरी तरह से समझना मानवीय समझ से परे की बात है। ''परे'' (*huperballō*) के कृदंत रूप का अनुवाद है जिसका अर्थ है ''ऊपर या आगे को फैंकना'' परे होना, बढ़ना, सीमा से बाहर जाना।[11] मसीह का प्रेम जिसे हम इतना अधिक जानना चाहते हैं वह हमारे ज्ञान से कहीं आगे है। यह ''इतना गहरा है कि इसकी गहराई कभी नापी नहीं जाएगी और इतना विशाल है कि इसकी

सीमा मानवीय समझ में कभी आएगी ही नहीं।''[12]

परमेश्वर की भरपूरी के लिए याचना (3:19)

[19]कि तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी तक परिपूर्ण हो जाओ।

आयत 19. इफिसियों के लिए की गई पौलुस की तीसरी याचना में हम फिर से *hina* (**कि**) देखते हैं। आयत के इस भाग का अक्षरश: अनुवाद है ''कि तुम परमेश्वर की सारी भरपूरी तक भर सको।'' कर्मवाच्य से पता चलता है कि यह कुछ ऐसा है जो परमेश्वर की आशिषें पाने के लिए हमारे लिए किया जाता है। ''तक'' (*eis*) सुझाव देता है कि मसीही व्यक्ति के जीवन का लक्ष्य या उद्देश्य **परमेश्वर की भरपूरी** से **परिपूर्ण हो** जाना है। यह वाक्यांश उस सब की बात करता है जो परमेश्वर है, न कि केवल उन अनुग्रहकारी दानों की जो वह हमें देता है। याचना यह है कि मसीही व्यक्ति परमेश्वर के साथ भरपूर हो जाए।

इफिसियों के लिए पौलुस की तीहरी याचना उनकी सहायता के लिए तैयार की गई थी, जैसा कि कलीसिया परमेश्वर की योजना और उद्देश्य को दूसरों तक पहुंचाती है। वे सफल हो सकते थे क्योंकि उन्हें ईश्वरीय सामर्थ दी गई थी, क्योंकि वे ईश्वरीय प्रेम से प्रेरित थी और अपने जीवनों में वह परमेश्वर के ईश्वरीय स्वभाव को दिखाते थे।

महिमा (3:20, 21)

[20]अब जो ऐसा सामर्थी है, कि हमारी विनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ के अनुसार जो हम में कार्य करता है, [21]कलीसिया में, और मसीह यीशु में, उस की महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे। आमीन।

आयत 20. इफिसियों को दी गई परमेश्वर की सामर्थ जिसे उन्होंने परमेश्वर के उद्देश्य के लिए प्रकट किया, बात करते हुए पौलुस ने परमेश्वर का एक स्तुतिगान लिख दिया। यह आयत परमेश्वर की बात करती है **जो सामर्थी है,** यह अभिव्यक्ति केवल रोमियों 16:25 और यहूदा 24 में भी मिलती है।

पूरे पत्र में परमेश्वर की सामर्थ पर ध्यान दिलाया गया है। इफिसियों के लिए अपनी पहली प्रार्थना में पतरस ने पूछा था कि वे ''मसीह के उस प्रेम को जान'' जाएं ''जो ज्ञान से परे है'' (1:19)। उस प्रार्थना और 3:14-21 वाली प्रार्थना और स्तुतिगान के बीच पौलुस ने दिखाया कि परमेश्वर ने अपनी ''सामर्थ'' किस प्रकार से दिखाई।

''जो सामर्थी है'' यूनानी क्रिया शब्द *dunamai* का अनुवाद है और इसका अर्थ ''योग्य होना, सामर्थी होना, अपनी योग्यता से योग्य होना है।''[13] परमेश्वर की सामर्थ उसी में से निकलती है। **कहीं अधिक काम कर सकता है** वाक्यांश मूलतया ''सबसे बढ़कर, सबसे बढ़कर कर सकता है'' है; परमेश्वर के पास ऐसे ऐसे कामों को करने की सामर्थ है जो **हमारी विनती और समझ से कहीं** बढ़कर हैं। पौलुस ने इसी बात की पुष्टि की कि परमेश्वर वह करने में सामर्थी है जिसे मसीही लोग प्रार्थना में करने को कहते हैं। वह उन कामों को कर सकता है

जिन्हें हम करने में असफल होते हैं पर जिसे हम सोच सकते हैं; वह हमारे मांगने या सोचने की हर बात कर सकता है; वह हम जो मांगते या सोचते हैं उससे कहीं बढ़कर हमारी समझ से कहीं अधिक कर सकता है।[14] परमेश्वर की यह ''सामर्थ'' हमारी कल्पना से बाहर है जो **हम में कार्य करता है**।

आयत 21. यूनानी धर्मशास्त्र में **महिमा** से पहले एक उप-पद है जो यह संकेत देता है कि यह महिमा ''जो हमारी ओर से उसकी होनी है भी वह *महिमा* है।''[15] आयतें 14, 19, 20 सहित संदर्भ से पता चलता है कि यह महिमा परमेश्वर पिता को ही मिलती है। ''महिमा'' शब्द (*doxa*) से लिया गया है और इसका अर्थ है ''महिमा करना, पहचानना, सम्मान करना, तारीफ़ करना।''[16] परमेश्वर को जो महिमा देय है वह मिलाए हुए लोगों (2:16) उद्धार पाए हुओं (5:23) के द्वारा **कलीसिया में** अर्थात मसीह की देह में होनी आवश्यक है (1:22, 23)। लोगों के रूप में आराधना में उसके उद्देश्य को पूरा करने के लिए कलीसिया के द्वारा काम करने के लिए परमेश्वर को अपने मनों की स्तुति लोगों के रूप में आराधना में कलीसिया ही भेंट चढ़ाती है। यह महिमा **मसीह यीशु में** भी होती है जो कलीसिया का सिर है और वह दायरा है जिसमें कलीसिया रहती और काम करती है।

पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानयुग में व्याख्याकर्त्ताओं को कुछ मुश्किल हुई। पौलुस का ''पीढ़ी से पीढ़ी'' कहने का (आम तौर पर एक ही समय में शायद तीस वर्ष के काल के दौरान रहने वाले लोगों की बात) और ''युगानयुग'' को इकट्ठे कहने का क्या अर्थ था? यह इसलिए कहा गया लगता है कि परमेश्वर के लोग अर्थात कलीसिया (समय ''पीढ़ी से पीढ़ी'' में) और अनन्तकाल (''युगानयुग'') परमेश्वर की महिमा करेंगे, क्योंकि उस सब के लिए जो उसने अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए किय है। ''[यह तथ्य कि] महिमा कलीसिया में परमेश्वर की और इतिहास में मसीह यीशु की और अनन्तकाल में पाठकों द्वारा अपनी 'आमीन' से पक्की की जानी है।''[17]

आमीन शब्द के साथ पौलुस ने पत्र के पहले भाग को समाप्त कर दिया। उसने मसीह और कलीसिया में परमेश्वर की सनातन मंशा पर लिखा था, इफिसियों के उस मंशा के गहराई से समझ पाने की प्रार्थना की थी, उस मंशा के बाहर लोगों का वर्णन किया था, दिखाया था कि वह मंशा परमेश्वर द्वारा आरम्भ हुई थी और मसीह द्वारा पूरी हुई थी, और ध्यान दिलाया कि परमेश्वर की मंशा वह भेद था जिसे प्रकट कर दिया गया है। स्तुतिगान का समाप्त करने वाले ''आमीन'' के साथ पौलुस के पाठक परमेश्वर की मंशा की व्यावहारिक प्रासंगिकता के लिए तैयार थे कि कलीसिया यहां और अब अपने विभिन्न सम्बन्धों में उस मंशा के अनुसार किस प्रकार से रही। यह सम्बन्ध इफिसियों के पत्र के दूसरे भाग में थे।

प्रासंगिकता

परमेश्वर की सामर्थ छोड़ना (3:14-21)

पौलुस प्रार्थना करने वाला व्यक्ति था। अपने पत्रों के द्वारा उसने हमें बंद कमरे में अपनी प्रार्थना सुनने दी और उसके प्रार्थना भरे जीवन की गहराई की हमें कुछ समझ आती है।

अध्याय 3 के अन्त में आने पर, इस पत्र में पौलुस ने दूसरी बार हमें बताया है कि किन आवश्यकताओं के लिए वह प्रार्थना कर रहा है। 1:15-23 में उसे समझ की चिंता थी; यहां

उसे इसके उपयोग की चिंता थी। पहले उसने प्रार्थना की थी कि इफिसियों को परमेश्वर के सामने अपनी स्तुति की समझ आ जाए। अब उसने प्रार्थना की उन्हें वह सामर्थ मिल जाए जो उस स्थिति से होती है।

पौलुस चाहता था कि परमेश्वर हर मसीही के जीवन में आत्मिक शक्ति दे, और वह चाहता था कि वह शक्ति परमेश्वर के धन के अनुपात में (अब मूल में, ''के अनुसार'' हो न कि ''में से'')। परमेश्वर कितना धनी है? उससे कहीं अधिक जितना आपको कभी आवश्यकता हो! परमेश्वर के पास हमारे लिए आत्मिक शक्ति देने की असीमित मात्रा है, बस उसे छोड़ने की राह देखता है!

हम परमेश्वर की सामर्थ के हमारे जीवनों में छोड़ने की पूरी समझ पाकर उसके साथ सहयोग कैसे कर सकते हैं? पौलुस की प्रार्थना का उत्तर जानने के लिए मसीही व्यक्ति के जीवन में कई बातें होना आवश्यक हैं।

झगड़ों से निपटने के लिए अंदरूनी सामर्थ (3:16)। पौलुस यहां सेवा के लिए सामर्थ के लिए प्रार्थना नहीं करता। वह बाद में दी गई। बल्कि इन मसीही लोगों के लिए पौलुस की प्रार्थना थी कि उन्हें झगड़ों से निपटने के लिए भीतरी सामर्थ मिले। आत्मिक जीवन की वास्तविक लड़ाई बाहर से पुरुस्कार मिलने से पहले अन्दर से पुरस्कार देती है।

पौलुस को इस समस्या का पहले से पता था (देखें रोमियों 7) वह वही करना चाहता था जो उसका मन कहता था कि सही है, पर इसके बजाय उसने वही बुराई की जिसे वह करना नहीं चाहता था। उसमें इच्छा तो सही थी परन्तु उसे पूरा करने की अंदरूनी शक्ति की कमी थी। वह रोमियों 7:24, 25 में वह पुकार उठा, ''मैं कैसा अभागा मनुष्य हूं! मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा? मैं अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं।''

रोमियों 8 में उसने इस धन्यवाद के किए जाने का कारण बताया। उसने यह रहस्य जान लिया था कि पवित्र आत्मा मसीही लोगों के बीच में कैसे काम करता है, ''इसलिए कि व्यवस्था की विधि हम में जो शरीर के अनुसार नहीं वरन आत्मा के अनुसार चलते हैं, पूरी की जाए'' (आयत 4)।

हो सकता है कि परमेश्वर के आत्मा के आगे झुकने और उसकी सामर्थ की शक्ति में चलने तक हम अपने आप में हार जाएं। नया जन्म लेने तक हमें परमेश्वर का आत्मा दिया जाता है (प्रेरितों 2:38) और हमारी देहें पवित्र आत्मा का मन्दिर बन जाती है (1 कुरिन्थियों 6:19)। चाहे वह हमारे भीतर वास करता है पर वह हमें उससे बढ़कर जितना हम उसके आगे अपने आपको सौंपते हैं हमें सामर्थ नहीं देगा।

हम सोच समझकर आत्मा को अपने जीवनों का नेतृत्व कहां तक देते हैं। हमारे मन उसके वचन से अर्थात आत्मा के कार्य करने वाले निर्देष से भरे होने आवश्यक हैं। कुलुस्सियों 3:16 कहता है, ''मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो; ...।'' हमें अपने मनों को इसके साथ रचा बसा लेना चाहिए। दाऊद ने कहा था, ''मैं ने तेरे वचन को अपने सदय में रख छोड़ा है, कि तेरे विरुद्ध पाप न करूं'' (भजन संहिता 119:11)।

मसीह के साथ गहरा सम्बन्ध (3:17)। पौलुस ने मसीही लोगों से प्रार्थना की कि उन्हें अंदरूनी शक्ति मिले जिससे उनके जीवनों में एक और वास्तविकता आ सके।

निश्चय ही मसीह इन लोगों के मनों में पहले से था, क्योंकि पौलुस ने पहले ही उन्हें ''पवित्र लोग'' कहा था (1:1)। उनके लिए उसकी इच्छा मसीह के साथ गहरा सम्बन्ध होने की थी। वह चाहता था कि यीशु के साथ उनकी संगति हो जिससे वह उन्हें मनों के कांटों पर बस सके।

यीशु ने अपने चलों को बताया, ''यदि कोई मुझ से प्रेम रखे, तो वह मेरे वचन को *मानेगा,* और मेरा पिता उस से प्रेम रखेगा, और हम उसके पास आएंगे, और उसके साथ बास करेंगे'' (यूहन्ना 14:23)। आज्ञापालन हमारे मनों में यीशु के वास करने की कुंजी है। जहां राजा सुरक्षित ढंग से अपने सिंहासन पर विराजमान है, उसे अपनी प्रजा के जीवनों में पूरी तरह से अपनी शक्ति का इस्तेमाल करने की छूट है।

दूसरों के प्रति प्रेम (3:17-19)। परमेश्वर के स्वभाव की छाप प्रेम है। जब मसीह हमारे जीवनों पर राज करने के लिए हमारे मनों में समा जाता है तब हम दूसरों के प्रति उसके प्रेम को प्रदर्शित करेंगे। प्रेम के कारण ही हम अपने पड़ोसियों को सच्चाई बताना चाहेंगे। प्रेम के कारण ही चोर आगे को दूसरों की चोरी नहीं करता। प्रेम के कारण ही मसीही व्यक्ति अपने आपको व्यभिचार से रोकता है। प्रेम ही पत्नी को अपने पति के अधीन होने को उकसाता है और प्रेम ही पति को अपनी पत्नी की सम्भाल अपने शरीर की तरह करने के लिए प्रेरित करता है।

यदि हम मसीही होने का दावा करें पर प्रेम हमारी जीवन शैली का आधार न हो तो मसीह हमारे मनों में नहीं समाया है। गलातियों 5:22, 23 कहता है कि जब हम आत्मा में चलेंगे तो निश्चय ही हमारे जीवनों में आत्मा के फल लगेंगे जिन में सबसे पहला फल प्रेम है। यीशु के हमारे मनों में घर बना लेने पर उसका प्रेम हमारे विचारों, कामों और बातों में दिखाई देने लगेगा।

केवल प्रेम में जड़ पकड़ने और नींव डालने पर ही हमें समझ आने लग सकता है कि मसीह का प्रेम कितना अमापनीय है। मसीह का प्रेम कितना चौड़ा है? इतना चौड़ा की सभी लोगों को समेटकर उन्हें एक कर सकता है। उसका प्रेम कितना लम्बा है? यह अनादिकाल से आरम्भ हुआ था और भविष्य में अनादिकाल तक जाता है यानी यह कभी खत्म नहीं होगा। उसका प्रेम कितना गहरा है? इतना गहरा कि बड़े से बड़े पापी को भी पाप के गंदे से गंदे गड्ढे में से निकाल ले। उसका प्रेम कितना ऊंचा है? इतना ऊंचा कि हमें परमेश्वर के दाहिने हाथ मसीह के साथ बिठाने के लिए स्वर्ग तक ले जाए।

मसीह के प्रेम की पहुंच से बाहर एक व्यक्ति भी नहीं है। जब हम ऐसे प्रेम को अनुभव करने लगते हैं तो हम अपने जीवनों में ईश्वरीय सामर्थ को छुड़ाने के अपने मार्ग पर चल रहे होते हैं!

परमेश्वर से परिपूर्ण होना (3:19)। कितने अद्भुत शब्द हैं! सब को परिपूर्ण करने वाला परमेश्वर हमें परिपूर्ण करना चाहता है। ... वह आकर हमारे अन्दर रहना चाहता है! वह अपने व्यवहार, अपने स्वभाव, अपने व्यक्तित्व से हमें भरना चाहता है।

जब हम यीशु से भर जाते हैं, तो हमारे अन्दर परमेश्वर की भरपूरी आ जाती है। परमेश्वर प्रेम है, इस कारण परमेश्वर की भरपूरी से परिपूर्ण मसीही प्रेम को ही दिखाएगा। परमेश्वर दयालु है, इस कारण परमेश्वर की भरपूरी पाया हुआ मसीही दूसरों के प्रति दया दिखाएगा। परमेश्वर पवित्र है, इस कारण परमेश्वर से परिपूर्ण मसीही अपने दैनिक जीवन में परमेश्वर भक्ति की पवित्रता को दिखाएगा। परमेश्वर की भरपूरी को पाने का अर्थ है कि हमारे अपने अन्दर परमेश्वर के गुण आ गए हैं, जो उससे कम है, ताकि मसीह की देह के अंग के रूप में हम संसार को दिखा

सकें कि परमेश्वर कैसा है। हमारे दुष्ट समाज के सामने यीशु की तस्वीर को दिखाने पर परमेश्वर हमारे द्वारा अपनी ईश्वरीय सामर्थ छोड़ता है।

हमारे जीवनों के लिए सामर्थ (3:20)। परमेश्वर के और उस सामर्थ के वर्णन के लिए जो उसने हर मसीही के लिए उपलब्ध करवाई है लगा कि पौलुस के पास इससे ऊपर शब्द नहीं हैं।

अब जो ऐसा *सामर्थी* है ...।

अब जो ऐसा सामर्थी है कि जो *हमारी विनती* ...।

अब जो ऐसा सामर्थी है कि जो हमारी *विनती और समझ* से कहीं अधिक ...।

अब जो ऐसा सामर्थी है कि जो हमारी सामर्थ से कहीं *अधिक* काम कर सकता है ...।

अब जो ऐसा सामर्थी है कि जो हमारी सामर्थ से कहीं *अधिक काम* कर सकता है ...।

... उस सामर्थ के अनुसार जो हम में कार्य करता है।

परमेश्वर हम से अपनी शक्ति और सामर्थ में चलने को नहीं कहता है। उसने हमें चुन लिया है और हमें छुड़ा लिया है और हम पर छाप की है, उसने हमें आत्मिक मृत्यु से जिला दिया है और अपने दाहिने हाथ बिठाया है वह जीवन में जिस सामर्थ की हमें आवश्यकता है उसे देकर उस काम को पूरा करता है जो उसने आरम्भ किया है। कोई सीमा नहीं है! हमारे जीवनों के लिए उसकी सामर्थ न खत्म होने वाली है।

सारांश। वह हमारे जीवनों में हमारी न खत्म होने वाली सामर्थ क्यों रखता है? ''कलीसिया में, और मसीह यीशु में, उस की महिमा पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग होती रहे। आमीन'' (3:21)। परमेश्वर महिमा पाना चाहता है। वह चाहता है कि लोग देखें कि वह सचमुच में कितना भला और महान है। उसे वह महिमा तभी मिलेगी जब कलीसिया के जीवन में काम करती हुई उसकी सामर्थ दिखाई दे।

क्रिस बुलर्ड

टिप्पणियां

[1]एथलबर्ट डब्ल्यू. बुलिंगर, *ए क्रिटिकल लैक्सिकन एंड कन्कोर्डेंस टू द इंग्लिश एंड ग्रीक न्यू टैस्टामैंट* (लंदन: सेमुएल बैगस्टर एंड सन्स, तिथि नहीं; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, रिजेंसी रेफरेंस लाइब्रेरी, 1975), 836. [2]वही, 769. [3]केन्नथ एस. वुएस्ट, *वुएस्ट'स वर्ड स्टडीज़ फ्रॉम द ग्रीक न्यू टैस्टामैंट फॉर द इंग्लिश रीडर: इफिसियंस एंड कोलोसियंस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1953), 88. [4]*द एक्सपोज़िटर'स ग्रीक टैस्टामेंट,* संपा. डब्ल्यू. रॉबर्टसन निकोल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1967), 3:314 में एस. डी. एफ. सैलमण्ड, ''द एपिस्टल टू द इफिसियंस।'' [5]एंड्रयू टी. लिंकोन, *इफिसियंस,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 42 (डलास: वर्ड बुक्स, 1990), 206. [6]बुलिंगर, 347. [7]वही, 175. [8]लिंकोन, 208–14. [9]बुलिंगर, 436. [10]लिंकोन, 214.

[11]वुएस्ट, 90. [12]लिंकोन, 213. [13]स्पायरस ज़ोडिएट्स, सम्पा., *द कम्पलीट वर्ड स्टडी न्यू टैस्टामेंट,* 2रा संस्क. (चटनूगा, टैनिसी: एएमजी पब्लिशर्स, 1992), 907. [14]लिंकोन, 216. [15]आर. सी. एच. लेंसकी, *द इंटरप्रिटेशन ऑफ़ सेंट पॉल'स एपिस्टल टू द गलेशियंस, टू द इफिसियंस एंड टू द फिलिप्पियंस* (कोलम्बस, ओहायो: वार्टबर्ग प्रैस, 1946; रिप्रिंट, मिनियापुलिस: आग्सबर्ग पब्लिशिंग हाउस, 1961), 500. [16]ज़ोडिएट्स, 907. [17]लिंकोन, 218.